Computer Proficiency Certification Test

Notations :

1.Options shown in green color and with ✔ icon are correct.

2.Options shown in red color and with ✖ icon are incorrect.

Question Paper Name:	WINDOWS REMINGTON GAIL 17th June 2018 Shift1
Subject Name:	WINDOWS REMINGTON GAIL
Creation Date:	2018-06-17 14:44:55
Duration:	25
Calculator:	None
Magnifying Glass Required?:	No
Ruler Required?:	No
Eraser Required?:	No
Scratch Pad Required?:	No
Rough Sketch/Notepad Required?:	No
Protractor Required?:	No

Mock

Group Number :	1
Group Id :	28470369
Group Maximum Duration :	10
Group Minimum Duration :	10
Revisit allowed for view? :	No
Revisit allowed for edit? :	No
Break time:	1
Mandatory Break time:	Yes
Group Marks:	0

Hindi Typing Test

Section Id :	284703117
Section Number :	1
Section type :	Typing Test
Mandatory or Optional:	Mandatory
Number of Questions:	1
Number of Questions to be attempted:	1
Section Marks:	0
Display Number Panel:	Yes
Group All Questions:	No

Sub-Section Number:	1
Sub-Section Id:	284703117
Question Shuffling Allowed :	No

Question Number : 1 Question Id : 284703969 Question Type : TYPING TEST Display Question Number : Yes

बहुत समय पहले की बात है हिमालय के जंगलो में एक बहुत ताकतवर शेर रहता था एक दिन उसने बारासिंघे का शिकार किया और खाने के बाद अपनी गुफा को लौटने लगा अभी उसने चलना शुरू ही किया था कि एक सियार उसके सामने दंडवत करता हुआ उसके गुणगान करने लगा।

Restricted/ Unrestricted: Unrestricted
Paragraph Display: Yes
Evaluation Mode: Non Standard
Keyboard Layout: Remington
Show Details Panel: Yes
Show Error Count: Yes
Highlight Correct or Incorrect Words: Yes
Allow Back Space: Yes
Show Back Space Count: Yes

Actual

Group Number :	2
Group Id :	28470370
Group Maximum Duration :	15
Group Minimum Duration :	15
Revisit allowed for view? :	No
Revisit allowed for edit? :	No
Break time:	0
Group Marks:	0

Hindi Typing Test

Section Id :	284703118
Section Number :	1
Section type :	Typing Test
Mandatory or Optional:	Mandatory
Number of Questions:	1
Number of Questions to be attempted:	1
Section Marks:	0
Display Number Panel:	Yes
Group All Questions:	No

Sub-Section Number:	1
Sub-Section Id:	284703118
Question Shuffling Allowed :	No

Question Number : 2 Question Id : 284703970 Question Type : TYPING TEST Display Question Number : Yes

मानवीय चेतना की दिव्य क्षमता है कल्पना। कल्पनाएं मन में उठने वाली तरंगे हैं। से तरंगे सदा एवं सदैव उठती ही रहती हैं। हनहें रोका नहीं जा सकता। सामान्य रूप से मन में उठने वाली तरंगों का रूप और स्वरूप बडा ही दु:खद और डरावना होता है। वस्तुत: मन ऐसी कल्पना कर लेता है जिसका मुर्त रूप ले पाना कठिन एवं असंभव होता हैं और जब यह कल्पना अधुरी रह जाती है तो इसकी टीस मन में जब-तब चुभती रहती है और यह एहसास बडा दु:खद एवं पीडादायक होता है। ऐसी कल्पनाएं जो हमारी अंतश्चेतना को ललचाती रहती हैं और अधूरी रहने पर इनके टूटन-दरकन की पीडा हमें छलनी करती रहती है, पर मन है कि मानता नहीं और ऐसी कल्पनाओं को पंख देता रहता है। मन में उठने वाली कल्पनाओं में यदि समय रहते कांट-छांट नहीं की जाए तो ये मन से निरंतर उठती रहती हैं और अपना एक संसार गढ लेती हैं। बारंबार उठने वाली ये कल्पनाएं है अपना एक ठोस आकार ले लेती हैं। जैसे यदि कोई व्यक्ति स्वयं के प्रति यह कल्पना कर बैठता है कि वह संसार का सबसे दु:खी एवं असहाय व्यक्ति है, इस संसार में उसे अपना कहने लायक कोई नहीं है तो उसे सभी पराये नजर आते हैं। इस दु:खद कल्पना से वह दु:खी हो जाता है और यथार्थ में वह स्वयं को संसार का सबसे दु:खी व्यक्ति मान बैठता है और धीरे-धीरे लोग भी उसे ऐसा ही मान बैठते है, जबकि ऐसा कूछ भी नहीं है। ऐसा इसलिए हुआ, क्योंकि व्यक्ति ने दुखद कल्पना को आश्रय-पश्रय देने के साथ उसका पोषण भी किया। दुखद एवं विकृत कल्पनाएं मन क्षमता को कुंद कर देती है और मन को विकारग्रस्त कर देती हैं। कालांतर में विकारग्रस्त मन, व्यक्ति को मनोरोगी बना देता है और उसका जीवन नरक जैसा बन जाता है। अपराधबोध में ऐसी दु:खद कल्पना का चक्र चलता रहता है और मन उससे मुक्त नहीं हो पाता है तथा पीडित होता रहता है। उससे तभी बाहर निकला जा सकता है, जब कल्पनाओं के इस घेरे को, इस चक्र को तोड दिया जाए । नकारात्मक कल्पना करते-करते उसका एक मजबूत वजूद बन जाता है और अपने अनुरूप वह यह डराने लगता है। असंगत भय नाम मनोरोग इसी का उदाहरण है जिसमें बेवजह डररूपी कल्पना डराती रहती है। यदि किसी को कुत्ते से भय है तो वह कुत्ते की कल्पना से ही सिहर उठता है, डर जाता है। असफलता की कल्पना हमें चिंता में डाल देती है और हम असफलता के डर से भयभीत रहते हैं। कल्पना शक्ति मानवीय चेतना की दिव्य क्षमता है। यदि इसे उभारा एवं सहेजा जाए तो इससे आश्चर्यजनक एवं निराली चीजों का सृजन किया जा सकता है। कल्पनाओं के रंग में जब भावनाओं का मधुर एवं शीतल रंग घुलता है।

Restricted/ Unrestricted: Unrestricted
Paragraph Display: Yes
Evaluation Mode: Non Standard
Keyboard Layout: Remington
Show Details Panel: Yes
Show Error Count: Yes
Highlight Correct or Incorrect Words: Yes
Allow Back Space: Yes
Show Back Space Count: Yes